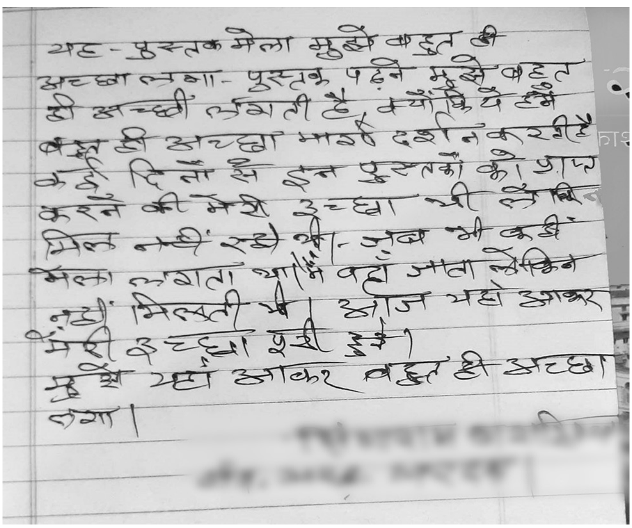
उम्मीद अभी बाक़ी है : एक अनुभव

नीरज श्रीमाल

राजस्थान के एक ज़िले में आयोजित पुस्तक मेले की महज़ एक झलक है इस लेख में। यह झलक काफ़ी कुछ दर्शा जाती है। यह कि, पुस्तकों की उपलब्धता होने से फ़र्क़ पड़ता है; अच्छी पुस्तकें सही दाम पर मिलने पर लोग उन्हें ख़रीदना चाहेंगे; छोटे क़स्बों, गाँवों में भी अभिभावक अपने और अपने बच्चों के लिए पुस्तकें ख़रीदना चाहते हैं, और ख़ुद भी पढ़ने की इच्छा रखते हैं; आदि। सिर्फ़ यह कह देना, कि पढ़ने की संस्कृति नहीं है, ठीक नहीं है। यह सोचना होगा कि ऐसी संस्कृति बनाने के लिए क्या कोशिशें करनी होंगी। –सं.

पुस्तकालय को जीवन्त एवं सक्रिय बनाने के लिए अनेक गतिविधियाँ की जा सकती हैं। इन्हीं गतिविधियों में से एक गतिविधि पुस्तक मेला है, जो बहुत बड़े समुदाय को एक मंच पर जोड़ने के लिए उपयुक्त प्रतीत होता है। ऐसे आयोजनों से समुदाय के हर स्तर के विद्यार्थी, शिक्षा क्षेत्र से जुड़े हुए व्यक्ति, सार्वजनिक और निजी क्षेत्र से जुड़े कार्मिकों के साथ ही उस क्षेत्र के आसपास रह रहे समुदाय तक पहुँच बनाई जा सकती है।

इसी सोच के मद्देनज़र, एक सात दिवसीय पुस्तक मेले का आयोजन अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन और भाषा एवं पुस्तकालय विभाग, राजस्थान सरकार के सहयोग से सिरोही ज़िले के सार्वजनिक पुस्तकालय परिसर में किया गया। इस मेले के दौरान ज़िला मुख्यालय के आसपास के विद्यालयों के बच्चों के साथ दोपहर में कहानी शिक्षण, आर्ट एण्ड क्राफ़्ट, नाट्य शिक्षण, आदि पर काम किया गया। इसके साथ ही सायंकालीन सभाओं में प्रवासियों के साहित्य, मानव के महान बनने की क्रिया, स्थानीय लेखकों से मुलाक़ात, युवाओं के लिए सैन्य एवं क़ानून क्षेत्र में रोज़गार के अवसर, आदि कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस दौरान कई नए अनुभवों से गुज़रने का मौक़ा मिला। बच्चों के साथ कई अभिभावक भी इस मेले में आए। इस लेख में, एक ख़ास अनुभव को साझा किया गया है, जिसमें मुझे पढ़ने-लिखने के प्रति जागरूक अभिभावक से रूबरू होने का अवसर मिला।


यह पुस्तक मेला मुझे बहुत ही अच्छा लगा। पुस्तक पढ़ने मुझे बहुत ही अच्छी लगती है, क्योंकि ये हमें बहुत ही अच्छा मार्ग दर्शन करती है। कई दिनों से इन पुस्तकों को प्राप्त करने की मेरी इच्छा थी लेकिन मिल नहीं रही थी। जब भी कहीं मेला लगता था मैं वहाँ जाता लेकिन नहीं मिलती थी। आज यहाँ आकर मेरी इच्छा पूरी हुई। मुझे यहाँ आकर बहुत ही अच्छा लगा।

यह एक ख़ास अनुभव है। ख़ास इसलिए, क्योंकि यह की जा रही कोशिशों में हमारे आत्मविश्वास को बढ़ाता है, और इस तरह जो प्रयास हम कर रहे हैं, उनको शिद्दत से करने के लिए प्रेरणा और मज़बूती प्रदान करता है। यह अनुभव एक पाठक-अभिभावक से बातचीत का है।

यह बात है मेले के एक दिन सुबह क़रीब 11:00 बजे की। मैं रोज़ की तरह पुस्तकालय परिसर पहुँचा ही था कि एक व्यक्ति मेरे पास आकर मारवाड़ी भाषा में पूछते हैं, "क्या पुस्तक मेला यहीं चल रहा है?" प्रत्युत्तर में मैंने उन्हें बताया, "जी हाँ!" उन्होंने जैसे ही मेरी "हाँ" सुनी, वैसे ही तेज़ गति से पुस्तक मेला परिसर में प्रवेश किया और अलग-अलग तरह की पुस्तकों को बड़ी ख़ुशी से देखने लगे। थोड़ी ही देर बाद उन्होंने अपनी पसन्द की पुस्तक का चयन किया और उसके पीछे लिखी क़ीमत के अनुसार अपनी शर्ट के अन्दर बनियान की जेब से एक थैली-सी निकालकर उसमें से रुपए निकालने लगे। मुझे थोड़ा आश्चर्य हुआ कि पिछले 4 दिनों में वह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने पुस्तक ख़रीदने से पहले या ख़रीदते हुए किसी भी प्रकार की छूट के बारे में नहीं पूछा, और सीधे ही लिखी क़ीमत देने को तैयार हो गए। मुझे लगा कि इनके बारे में जानना चाहिए, और फिर हमने आपस में बात शुरू की।

उन्होंने मुझे बताया कि उनका नाम मेवाराम गरसिया है, और वह पेशे से एक मज़दूर हैं। वे मज़दूरी के लिए बाली और शिवगंज के आसपास आते हैं। मेवाराम पाली ज़िले में बाली ब्लॉक के अरड़वा गाँव के रहने वाले हैं, और उन्होंने 12वीं कक्षा तक पढ़ाई की है। उन्हें इस पुस्तक मेले की जानकारी स्थानीय दैनिक समाचारपत्र के ज़रिए मिली, और वह अपनी मज़दूरी से छुट्टी लेकर पुस्तकें ख़रीदने आ गए। मैंने उनसे पूछा, "आप इस पुस्तक का क्या करेंगे?" हँसते हुए उन्होंने जवाब दिया, "पहले तो मैं इसे पढ़ूँगा, और फिर अपने बच्चों को पढ़कर सुनाऊँगा।" मेरी जिज्ञासा और बढ़ी। मैंने उनसे उनके बच्चों के बारे में पूछा, "आपके बच्चे क्या करते हैं?" उन्होंने बताया, "मेरे 3 बच्चे हैं। 2 लड़के और 1 लड़की। दोनों लड़के स्कूल पढ़ने जाते हैं। लड़की अभी 3 साल की है, अगले साल स्कूल जाएगी।" इस बातचीत के दौरान पुस्तक विक्रेता भी हमारे पास था और वो भी उनकी बातों से काफ़ी प्रभावित हुआ। पुस्तक विक्रेता उनको उचित छूट पर पुस्तक देने के लिए तैयार हो गया। पुस्तक की क़ीमत में छूट मिलने से मेवाराम के चेहरे पर एक अलग ही ख़ुशी आ गई। वे पूछने लगे, "क्या मैं अपने बच्चों के लिए और पुस्तकें देख सकता हूँ?" इसपर हमने सहमति जताई। फिर क्या था, वह बड़ी ख़ुशी-ख़ुशी एक के बाद एक बहुत सारी पुस्तकें देखने लग गए। सुबह क़रीब 11 बजे से दोपहर 3:30 बजे तक बिना रुके बड़ी खोजबीन कर वे 2 पुस्तकें अपने लिए, और 2 अपने दोनों बेटों के लिए लेकर जाने लगे।



चित्र : हीरा धुर्वे

जाने से पहले वह मेरे पास आए और बताया कि उन्होंने ख़ुद के और अपने बच्चों के लिए पुस्तकें ली हैं। इसपर मैंने उनसे पूछा, "अपनी बेटी के लिए आपने कुछ नहीं लिया?" उन्होंने बताया, "वो अभी पढ़ नहीं सकती है, इसलिए अपने छोटे बेटे के लिए जो कहानी और कविता की किताब ली है, उसे मैं रात को सोने के समय पढ़कर सुनाऊँगा।" मैंने भी उन्हें *प्लूटो* और *चकमक* की एक-एक प्रति देते हुए बताया कि इसमें भी बहुत अच्छी कहानियाँ और कविताएँ छपती हैं। ये भी अपने साथ लेकर जाना। उनके जाने से पहले मैंने उनसे अनुरोध किया कि आपके अनुभव ज़रूर लिखकर जाना। उन्होंने जो लिखा उसकी तस्वीर इस लेख के पहले पेज पर देख सकते हैं।

मेवाराम के जाने के बाद मुझे लगा कि आज भी जहाँ कई लोगों को लगता है कि मोबाइल फ़ोन ने पढ़ने की आदत को ख़त्म कर दिया है, फिर भी कहीं-न-कहीं उम्मीद अभी बाक़ी है। मेवाराम और उनके जैसे बहुत सारे व्यक्ति और अभिभावक अभी भी इस पढ़ने की आदत को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक आगे बढ़ाने हेतु जागरूक हैं।

नीरज श्रीमाल पिछले एक दशक से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के ज़िला संस्थान सिरोही में सन्दर्भ व्यक्ति, पुस्तकालय के पद पर कार्यरत हैं। आपने वर्ष 2010 में पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में स्नातकोत्तर किया है। ज़िला संस्थान के विभिन्न ब्लॉक के अन्तर्गत संस्था द्वारा संचालित पुस्तकालयों के संचालन में सहयोग कर रहे हैं। संस्था द्वारा प्रारम्भिक शिक्षा के अन्तर्गत भाषा (हिन्दी) एवं गणित विषय में शिक्षकों के साथ कार्य करने का अनुभव मिल रहा है। पुस्तकालय से जुड़े रहने से उनका पढ़ने एवं लिखने के प्रति विशेष लगाव रहा है।

सम्पर्क : neeraj.shrimal@azimpremjifoundation.org